उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि० — पत्र

दिगंत - भाग - 2, शीर्षक - 'छप्पय'

कवि — नाभादास

Date ________ Page ______

भगति विमुख जे धर्म सो सब अधर्म करि गाए।
योग, यज्ञ, व्रत, दान, भजन बिनु तुच्छ दिखाए॥
हिन्दू, तुरक, प्रमान रमैनी, सबदी, साखी।
पक्षपात नहिं बचन सबहिके हितकी भाखी॥
आरूढ़ दशा ह्वै जगत पै, मुख देखि नाहिन भनी।
कबीर कानि राखि नहिं, वर्णाश्रम षट् दर्शनी॥

भावार्थ :- भक्त कवि संत कबीर दास ने भक्ति विमुख धर्मों की धज्जी उड़ा दी है। उन्होंने वास्तविक धर्म को स्पष्ट करते हुए योग, यज्ञ, व्रत, दान और भजन के महत्व का बार-बार प्रतिपादन किया है। उन्होंने अपनी सबदी, साखियों और रमैनी में क्या हिन्दू और क्या तुर्क सबके प्रति आदर भाव व्यक्त किया है। कबीर के वचनों में पक्षपात नहीं है। उनमें लोक मंगल की भावना है। कबीर मुँह देखी बात नहीं करते। उन्होंने वर्णाश्रम के पोषक षट् दर्शनों की दुर्बलताओं को तार-तार करके दिखला दिया है।

भक्त कवि नाभादास का यह छप्पय छन्द संत कबीर के प्रति उनकी उदारता का दर्शन कराता है। कबीरदास ने तत्कालीन समाज को आईना दिखाने का कार्य किया है। यह सर्वविदित है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०कृ०सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
21/04/20

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० –पत्र

निबंधमाला – गद्य खण्ड

Date: _______ Page: _______

शीर्षक – 'सिद्धि और प्रसिद्धि'

लेखक – किशोर जी

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर–

प्रश्न :- साहित्य में किस तत्व का विशेष महत्व है?

उत्तर :- साहित्य में दर्शन का विशेष महत्व है। यह दर्शन ही उसका मेरुदण्ड होता है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि यह दर्शन रचना में तिल-तण्डुल की तरह मिला हो। बल्कि इसे उसमें इस तरह आना चाहिए जैसे दूध में मिश्री घुली हुई हो।

साहित्य के लिए अनुभूति की सच्चाई एवं आदर्श का निर्वहन ये भी आवश्यक तत्व है। अनुभूति की अकृत्रिमता से जहाँ साहित्य को सिद्धि मिलती है, वहीं आदर्श की स्थापना से उसकी प्रसिद्धि स्थापित होती है। हाँ यह सही है कि कोरे आदर्श के लिए साहित्य नहीं लिखा जा सकता। इसलिए लेखक के अनुसार आदर्श की अप्रत्यक्ष योजना बहुत बड़ी कला है।

प्रश्न :- साहित्यकार को प्रसिद्धि कब मिलती है?

उत्तर :- लेखक किशोर जी के कथनानुसार साहित्यकार को प्रसिद्धि कब मिलती है इसमें परस्पर विरोधी मत है। अधिकांश विद्वानों का कहना है कि यह मृत्यु के बाद प्राप्त होती है। यथा वॉबसन और मिल्टन यही कहते हैं। परन्तु लेखक का विचार इससे भिन्न है। कवि सम्राट रवीन्द्रनाथ ठाकुर को उनके जीवन काल में प्रसिद्धि प्राप्त हुई थी। भवभूति जैसे लोग अनन्त काल तक इसकी प्रतीक्षा करते हैं।

अतः किशोर जी भावी साहित्य का स्वरूप स्थिर करते हुए स्वयं लेखकों को साधारणीकृत होने का संदेश देते हैं।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुरवसेना, पूर्णियाँ

2020 वर्षीय परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर -
शास्त्री प्रथमखण्ड - अनिवार्य द्वितीय-पत्र - राष्ट्रभाषाहिन्दी

प्रश्न :- जयद्रथ-वध खण्ड काव्य के द्वितीय सर्ग कीकथावस्तु कासारांश लिखें
उत्तर :- 'जयद्रथ-वध' खण्ड काव्य राष्ट्रवादी कवि मैथिलीशरण गुप्त की एक महत्वपूर्ण रचना है। 20वीं सदी के प्रथम एवं द्वितीय दशक में राष्ट्रीय-आन्दोलन अपने उत्कर्ष की ओर बढ़ रहा था। इसी क्रम में कवि गुप्तजी ने ऐतिहासिक तथ्यों को आधार बनाकर वर्तमान युवा राष्ट्रीय आन्दोलनकारियों के अन्दर राष्ट्र प्रेम की भक्ति जागृत करने का कार्य अपनी रचनाओं के माध्यम से करने का सफल प्रयास किया है। क्योंकि हमारा देश अंग्रेजों का गुलाम था।

इस खण्ड काव्य की द्वितीय सर्ग की कथा वस्तु बड़ी मार्मिक है। वीर अभिमन्यु की मृत्यु के संवाद पाकर समस्त पाण्डव पक्ष में शोक छा जाता है। अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा उस दुःखद संवाद को सुनकर मूर्छित हो जाती है। चेतना आने पर वह उस स्थान पर आ जाती है जहाँ अभिमन्यु का शव लाकर रखा गया था। उसने अपने प्राणप्रिय के शव को गोद में लेकर अनेक प्रकार से विलाप करने लगी। यथा-

मैं हूँ वही जिसको किया था विधि विहित अर्द्धांगिनी,
भूलो न मुझको नाथ, हूँ मैं अनुचरी चिरसंगिनी।
तव मूर्ति क्षत-विक्षत वही निश्चेष्ट अब भू पर पड़ी।
बैठी तथा मैं देखती हूँ, हाय री छाती कड़ी।

कभी वह स्वयं को धिक्कारने लगती, कभी अपने नाथ को उलाहना देती। उत्तरा विलाप करती हुई कहती है कि हे नाथ! आपने तो मुझे सहचरी का पद दिया था। उसके साथ ही मुझे अनुचरी का पद भी प्राप्त हो गया। इस दशा में आज बोलते क्यों नहीं हो। उत्तरा को विगत जीवन की बहुत सी बातें याद आती हैं। याद करते-करते वह बेहोश होकर गिर पड़ती है। दासियाँ शीघ्र ही उसकी बेहोशी दूर करने का उपाय करती हैं। उत्तरा फिर अनेक प्रकार से विलाप करना आरम्भ कर देती है। कुछ समय के उपरांत द्रौपदी और सुभद्रा भी वहाँ आकर विलाप करने लगती हैं। इन सबों को देखकर धर्मराज युधिष्ठिर भी रोने लगे और अनेक प्रकार से वीर-अभिमन्यु के गुणों का गान करने लगे। ठीक उसी समय व्यास मुनि का वहाँ आगमन होता है। व्यास मुनि धर्मराज को अनेक प्रकार की कथाएँ सुना-सुनाकर उन्हें शान्त करने का प्रयास करते हैं। राजा युधिष्ठिर अभिमन्यु के शव को सामने देखकर धीरज न रख सके और पुनः विलाप करने लगे। उसी समय अर्जुन संसप्तकों को मारकर लौटने के क्रम में मार्ग में अनेक अपशकुन को देखकर

शेष आगे —

उनकी प्रसन्नता तिरोहित होने लगी। तब उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण से अपनी व्याकुलता बतलाई। श्री कृष्ण उनको सांत्वना देते हुए शीघ्र ही उनको भाईयों के पास ले आये। वहाँ अभिमन्यु के वध का संवाद सुना और जयद्रथ की नीचता भी सुनी कि उसने मृत अभिमन्यु के सिर पर अपना पैर रखा था। यह सुनकर वीर अर्जुन शोक में संतप्त होकर पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं।

इस प्रकार कवि मैथिलीशरण गुप्त ने जयद्रथ-वध के द्वितीय सर्ग में वीर अभिमन्यु के वीरगति प्राप्त होने के पश्चात पत्नी उत्तरा के विलाप का विस्तार से वर्णन किया है। इसलिए द्वितीय सर्ग में करुण रस की प्रधानता सर्वत्र दिखाई पड़ती है। वास्तव में इस खण्डकाव्य का द्वितीय सर्ग पाठकों के हृदय पर भी गहरा छाप छोड़ता है। साथही-साथ पाठक अगले सर्ग को पढ़ने के लिए काफी व्याकुल हो जाता कि अब आगे क्या होगा। निश्चित रूप से यह सर्ग मर्मस्पर्शी है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
21/08/20